Girls' High School & College, Prayagraj

Work Sheet No-3

Session- 2020-2021

Class-6(A,B,C,D,E,F)

Subject - Hindi Literature

निर्देश- अभिभावकों से अनुरोध है कि दिए गए गद्यांश को पढ़ने एवं उससे संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिखने में छात्राओं की सहायता करें।

नोट :-"भगवती चरण वर्मा" द्वारा लिखित इस कहानी "प्रायश्चित" को नीचे दिए लिंक पर भी देखा जा सकता है।

https://www.hindisamay.com/content/2943/1/--.cspx

पाठ – प्रायश्चित (भगवती चरण वर्मा)

रामू की बहू एक चौदह साल की बालिका है, जिसे उसकी सास और उसका पति बहुत प्यार करते थे। पहली बार दो महीने के बाद जब वह ससुराल आई, तो सास ने उसे घर की चाभियाँ दे दी और वो स्वयं पूजा-पाठ में लग गई। अब रामू की बहू का ही पूरे घर पर हुक्म चलता था,उसे पूरे घर में सब से बहुत प्रेम था। किंतु वह कबरी बिल्ली से बहुत नफ़रत करती थी।

एक दिन रामू की बहू ने भिन्न-भिन्न प्रकार के मेवे डालकर दूध को देर तक औटाया और रामू के लिए खीर बनाई। खीर पर सोने का वर्क चिपका कर, कटोरे में निकाल कर, ऊँचे ताख पर रख दिया। जिससे बिल्ली वहाँ पहुँच न सके , परंतु जैसे ही बहू पान लेकर सास को देने गई, बिल्ली ने छलाँग लगाकर कटोरे को गिरा दिया और कटोरा ज़मीन पर तेज आवाज़ के साथ गिर कर टूट गया।

कटोरे के गिरने की आवाज़ सुनकर, रामू की बहू ने जल्दी से पान सास को दिया और दौड़कर वापस आई, तो वह अचंभित रह गई। क्योंकि कटोरा टुकड़े-टुकड़े होकर ज़मीन पर गिर गया था। और बिल्ली बड़े मन से खीर चाट रही थी। रामू की बहू को देखते ही कबरी बिल्ली चंपत हो गई। रामू की बहू को बहुत गुस्सा आया, तथा वह पूरी रात सो ना सकी। सुबह उसकी आँख खुली तो देखा, बिल्ली देहरी पर बैठकर प्रेम पूर्वक उसे ही देख रही है। कबरी बिल्ली को देखकर रामू की बहू को बहुत क्रोध आया और उसने पाटा उठाकर बिल्ली पर मार दिया। पाटा लगने से बिल्ली एकदम से पलट गई और उसने कोई आवाज़ नहीं की। लेकिन पाटा की आवाज़ सुनकर महरी अपनी झाड़ू छोड़कर, मिसरानी रसोई में खाना बनाना छोड़कर तथा सास पूजा छोड़कर वहाँ उपस्थित हो गईं ।

महरी ने घबराकर बोला, " हे राम! बहू ने बिल्ली मार दिया, यह तो बुरा हुआ।"

मिसरानी चिल्लाई, मैं तो अब रसोई नहीं बनाऊंगी, क्योंकि बिल्ली की हत्या एक घोर पाप है । यह मानव हत्या के ही बराबर है।

सास भी घबरा गई, और बोली , "हां तुम दोनों ठीक ही कहती हो, यह घोर पाप हो गया है। जब तक इस हत्या का पाप बहू के सिर पर रहेगा, कोई पानी भी नहीं पी सकता।" महरी से कहा, "तुम जाओ और जल्दी से पंडित जी को बुला लाओ। " बिल्ली के मरने की खबर पूरे गांव में जंगल में आग की तरह फैल गई, इससे पड़ोस की औरतों का रामू के घर ताँता बँध गया।

जब महरी पंडित जी के घर पहुँची, तो उस समय वो पूजा कर रहे थे । मुस्कुराते हुए खड़े हुए और पंडिताइन से बोले, " भोजन ना बनाना, लाला घासीराम की पतोहू ने बिल्ली मार डाली है। प्रायश्चित होगा, पकवानों पर हाथ लगेगा। " कहा जाता है कि मथुरा में जब पंसेरी खुराक वाले पंडित जी को ढूँढ़ा जाता था, तो पंडित परमसुख जी को उस सूची में प्रथम स्थान दिया जाता था। पंडित परमसुख जब रामू के घर पहुँचे तो कोरम पूरा हुआ और पंचायत बैठ गई । किसनू की माँ ने पूछा," पंडित जी बिल्ली की हत्या से कौन सा नरक मिलता है?"

पंडित जी ने अपनी पत्रा के पन्ने उलट - पलट कर बहुत ध्यान से कुछ सोचा और फिर माथे पर बल डाल कर, नाक सिकोड़ कर गंभीर स्वर में बोले, "हरे कृष्णा!, हरे कृष्णा! यह तो बड़ा अनर्थ हो गया, प्रातः काल ब्रह्ममुहूर्त में बिल्ली की हत्या हो गई, यह घोर कुंभीपाक नरक का पाप है। "

रामू की माँ बहुत उदास हो गईं और उसकी आँखों में आँसू आ गए । और उसने घबराकर पंडित जी से पूछा, " पंडित जी अब क्या होगा? "पंडित जी ने मुस्कुरा के कहा, "अरे चिंता की बात नहीं है । शास्त्रों में प्रायश्चित का विधान है, सब कुछ ठीक हो जाएगा।

रामू की माँ ने घबराकर कहा," पंडित जी आप ही कुछ करें इसीलिए तो आपको बुलाया है। "

पंडित जी ने कहा," सोने की बिल्ली बनवा कर बहू से दान करवा दिया जाए और इक्कीस दिन का पाठ किया जाए।

छुन्नू की दादी ने कहा," कि पंडित जी ठीक ही तो कह रहे हैं अभी दान करा दिया जाए और बाद में पाठ हो जाएगा।"

रामू की माँ ने फिर पूछा," पंडित जी बिल्ली कितने तोले की बनवाई जाए ?"

पंडित जी मुस्कुराते हुए अपनी तोंद पर हाथ फेरते हुए बोले, "कम से कम इक्कीस तोले की बिल्ली बनवा कर दान कर दो। और बाकी आपकी अपनी श्रद्धा।" रामू की माँ ने आँखे फाड़ कर देखा और कहा, "अरे बाप रे! पंडित जी यह तो बहुत ज़्यादा है, एक तोले की बिल्ली से काम नहीं निकल सकता ?"

पंडित परमसुख हँसते हुए बोले, "एक तोला सोने की बिल्ली, अरे रामू की माँ इतना लालच ना करो। बहू के द्वारा बहुत बड़ा पाप हो गया है। अगर आपका लोभ इतना ही रहा तो पाप कैसे कटेगा ? फिर रामू की माँ और पंडित जी में मोल-तोल शुरू हुआ और बात ग्यारह तोले पर आकर ठहर गई। इसके बाद पूजा पाठ की बात, तो पंडितजी बोले, "परेशान होने की कोई आवश्यकता नहीं, वह मैं अपने घर पर ही कर दूंगा, सामग्री मंगा कर मेरे घर भिजवा देना।

रामू की माँ ने पूछा," पूजा में सामान कितना लगेगा ? "

पंडित जी बोले," रामू की माँ, घबराओ नहीं, कम से कम सामान में हम पूजा कर देंगे। तुम बस दस मन गेहूँ, एक मन चावल, एक मन दाल,मन भर तिल, पाँच मन जौ, पाँच मन चना, चार पंसेरी घी और मन भर नमक मेरे घर भिजवा देना।"

रामू की माँ ने घबराकर कहा," अरे बाप रे! इतना सामान! पंडित जी इसमें तो डेढ़ सौ रुपए लग जाएँगे । " रामू की माँ रुआँसी हो गईं ।

पंडित जी बोले, "इससे कम में काम न चलेगा। क्योंकि बहू के सर पर बड़ा पाप है, प्रायश्चित तो करना पड़ेगा, यह कोई खेल- तमाशा नहीं है।"

किसनू की माँ पंडित जी के भाषण से प्रभावित होकर बोली, "पंडित जी ठीक ही तो कह रहे हैं, बिल्ली की हत्या का बड़ा पाप है , तो प्रायश्चित भी बड़ा होगा। पैसे तो खर्च होंगे ही। " छुन्नू की दादी ने भी हामी भरी और कहा," दान पुण्य से ही पाप कटते हैं। और इसमें किफ़ायत ठीक नहीं है।" मिसरानी भी बोल पड़ी, "माँ जी आप लोग तो बड़े लोग हैं, थोड़ा सा खर्च करने में अखर क्यों रहा है?" रामू की माँ चुपचाप सब की बातें सुन रही थी। अब पंडित जी फिर मुस्कुराए और उन्होंने कहा, " कि बहू के ऊपर बहुत बड़ा पाप कुंभीपाक नरक है। इसमे खर्चे से न बचो। फिर नाराज़गी की मुद्रा में बोले, "अगर तुम्हें यह अखर रहा हो तो मैं चल रहा हूँ ।" यह कहकर पंडित जी ने अपनी पोथी - पत्रा समेटना शुरू किया।

पड़ोस के लोगों ने पंडित जी को समझाया और एक आवाज़ मे कहा, " बेचारी को कुछ अखर नहीं रहा, बल्कि दुःख बहुत है।"

रामू की माँ घबरा के पंडित जी के पैरों को पकड़ कर विनती करने लगी।पंडित जी फिर आसन की मुद्रा में बैठे और बोले-

" इक्कीस दिन के पाठ के इक्कीस रुपए और इक्कीस दिन तक पाँच - पाँच ब्राह्मणों को भी भोजन करवाना पड़ेगा।"पर रामू की माँ, तुम चिंता न करो, मैं अकेले ही दोनों समय भोजन कर लूँगा, जिससे पाँच ब्राह्मणों के भोजन का फल मिल जाएगा।" "अब तुम सामान का प्रबंध करो और ग्यारह तोला सोना दो, मैं बिल्ली बनवा कर दो घंटे में लौटूंगा।"

पंडित जी की बात अभी समाप्त भी न हुई थी, कि महरी दौड़ती हुई आई और रामू की माँ से बोली , "माँ जी, बिल्ली तो उठ कर भाग गई।"

शब्दार्थ-

1- ताख -दीवार में बनी अलमारी

2- घृणा - नफ़रत

3 - हुक्म - आज्ञा

4- औटाना - कई बार उबालना

5 - अंदाज़ी - अनुमान लगाया

6 - चंपत - गायब

7 - देहरी - दरवाज़े की चौखट

8 - खिसकना - सरकना

9 – पतोहू - बेटे की पत्नी

10 - कोरम - गणपूर्ति, नियमतः निर्धारित सदस्य संख्या की उपस्थिति

11 - विधान - नियम

12 – पंसेरी - पाँच सेर की तौल

13 - किफ़ायत - कंजूसी /कमी

14 - घर - गृह

15 – भंडार - कोष, खज़ाना

प्रश्न -1- निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1- कबरी बिल्ली से कौन घृणा करता था ?

2- पंडित जी का पूरा नाम लिखिए।

3- पंडित जी ने बिल्ली की हत्या को कौन सा पाप बताया ?

4- पंडित जी ने कितने तोले की बिल्ली बनवा कर दान करने को कहा ?

5- पंडित जी ने कितने दिनों का पाठ करने को कहा ?

6- रामू की माँ ने पंडित जी को क्यों बुलाया ?

7- मिसरानी ने रसोई बनाने से इंकार क्यों कर दिया ?

8- पंडित परम सुख ने पंडिताइन से क्या कहा ?

9 -अंततःपंडित जी के हाथ क्या लगा ?

10- पंडित जी ने प्रायश्चित के लिए पूजा का क्या- क्या सामान बताया?

प्रश्न - 2 निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखिए -

1- हाथ लगना -

2- ताँता बँधना -

3- माथे पर बल पड़ना -

4- आँखें फाड़कर देखना-

5- जंगल मे आग -

प्रश्न- 3 निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1- बहू के आने के बाद सास जी ने ___ में मन लगाया।

2- रामू की बहू ने रामू के लिए ___बनाया था।

3- सुबह कबरी बिल्ली ___पर बैठी थी।

4- रामू की बहू ने बिल्ली पर ___दे मारा।

5- रामू की बहू सास को __देने चली गई।

प्रश्न -4 निम्नलिखित सही वाक्यों के सामने सही का ☑ और गलत वाक्यों के सामने गलत का ☒ चिन्ह लगाए -

1 - रामू की बहू कबरी बिल्ली से बहुत प्रेम करती थी । [ ]

2 - पंडित जी ने इक्कीस दिन के पाठ के लिए इक्कीस रूपये बताए । [ ]

3 - शास्त्रों में प्रायश्चित का विधान है। [ ]

4 - पंडित जी ने सोलह तोले की बिल्ली दान करने को कहा। [ ]

5 - रामू ने कबरी बिल्ली को मार दिया था। [ ]

प्रश्न -5 निम्नलिखित शब्दों के दो- दो पर्यायवाची शब्द लिखिए -

1-दिन

2 -प्रबंध

3 -सोना

4-पानी

5-आँख

प्रश्न -6 निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए-

1 - प्रेम

2 – नरक

3 - किफ़ायत

4 – पवित्र

5 – प्रथम

प्रश्न - 7 निम्नलिखित शब्दों के स्त्रीलिंग रूप लिखिए -

1 - पंडित

2- नौकर

3- ससुर

4 -दादा

5 -भाई

प्रश्न - 8 निम्नलिखित शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए -

1 - पाप

2 - खुशी

3 - दान

4 - फ़र्श

5- प्रभावित

END